Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2 | Issue-12 | December - 2024 | Page 93-96

प्रभा खेतान के उपन्यासों में स्त्री समस्या के विविध आयाम

डॉ. कविता वैष्णव
सहायक प्राध्यापक
महर्षि वेद व्यास शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भखारा, जिला-धमतरी, छत्तीसगढ़

स्त्रीवादी लेखिका प्रभा खेतान का नाम हिंदी महिला उपन्यासकारों में विशिष्ट स्थान रखता है। उन्होंने अपने उपन्यासों के माध्यम से न केवल भारतीय समाज में स्त्रियों के सामने उपस्थित होने वाली समस्याओं को उजागर किया बल्कि उनके भीतर की जटिलताओं, आत्ममंथन, परंपरा और आधुनिकता के बीच चल रहे संघर्ष को भी गंभीरता से चित्रित किया। प्रभा खेतान की कृतियाँ मुख्य रूप से स्त्री के आंतरिक संघर्ष, सामाजिक असुरक्षा, लैंगिक भेदभाव और पारिवारिक संघर्षों के इर्द-गिर्द घूमती हैं। भारतीय और विदेशी पृष्ठभूमि में स्त्री की सामाजिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक समस्याओं तथा स्त्री-पुरुष के जटिल संबंधों का अंकन उनके उपन्यासों में हुआ है। उपन्यासों के घटनाक्रम भी उनके निजी जीवन के बहुत निकट प्रतीत होते हैं। स्त्री के अंतर्मन की पारखी प्रभा जी ने अपने पात्रों द्वारा आत्मविश्लेषण के माध्यम से स्त्री के व्यक्तित्व की कुंठाओं व अंर्तद्वन्द्व को उद्घाटित करने का सार्थक प्रयास किया है। 'आओ पेपे घर चलें' की प्रभा, 'तालाबंदी' के श्यामबाबू, 'छिन्नमस्ता' की प्रिया, 'अपने-अपने चेहरे' की रमा आदि पात्र स्वयं लेखिका के व्यक्तित्व का ही प्रतिबिंब है। प्रभा जी का परंपराभंजक निर्भीक व्यक्तित्व उनके उपन्यासों की कथानायिकाओं में प्रतीकित होता है जो परंपरा, समाज और आंतरिक द्वंद्व के बीच अपनी पहचान और अस्तित्व की तलाश में संघर्ष करती हुई आर्थिक आत्मनिर्भरता के साथ स्वतंत्र जीवन जीने की इच्छुक हैं और अपने अधिकारों के प्रति सजग भी हैं किंतु स्त्रियों के साथ समस्याओं का जुड़ा रहना उसकी नियति सी बन गई है। उनके उपन्यासों में स्त्री समस्या के विविध आयाम परिलक्षित हुए हैं।

प्रभा खेतान के सभी उपन्यासों में स्त्री-उपेक्षा की समस्या को यथार्थ रुप में दर्शाया गया है। भारतीय समाज में स्त्री जन्म से लेकर मृत्यु तक 'उपेक्षिता' और 'अन्या' के दायरे से पूरी तरह स्वतंत्र नहीं हो पाती है। यह भी विडंबना ही है कि स्त्री केवल पुरुष द्वारा ही नहीं बल्कि स्त्रियों के द्वारा भी उपेक्षित होती है। जन्म के पश्चात् ही उसके साथ लैंगिक भेदभाव प्रारंभ हो जाता है। प्राचीन काल में कन्या शिशु को जन्म के तत्काल बाद ही मार दिया जाता था और आज के वैज्ञानिक युग में भ्रूण हत्या द्वारा उसे जन्म से पूर्व मार दिया जाता है। इन सारे षडयंत्रों के बाद भी यदि कन्या जन्म लेकर इस संसार में आती है तो उसकी प्रतिभा को कुंठित करने और व्यक्तित्व को नष्ट करने के उपाय किए जाते हैं। स्त्री के जीवन का लक्ष्य विवाह तथा पति सेवा ही माना जाता है। पुरुष को रिझाने, तृप्त करने और संतानोत्पत्ति को ही स्त्री जीवन की सार्थकता बताया गया। 'अपने-अपने चेहरे' में लेखिका इस विडंबना को व्यक्त

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2 | Issue-12 | December - 2024 | Page 93-96

करते हुए कहती हैं , "स्त्री पुरुष में समानता है कहाँ ? एक सत्ता की कुर्सी पर बैठा हुआ अपने पूरे सामर्थ्य के साथ, दूसरा आँचल पसारे न्याय की भीख मांगती हुई, उसके चरणों में झुकी हुई।"1

प्रभा जी ने अपने उपन्यासों में स्त्री असुरक्षा तथा स्त्री शोषण की पीड़ा को यथार्थ अभिव्यक्ति दी है। चाहे बालिका हो या युवती, विधवा हो या सधवा, गृहणी हो या कामकाजी, प्रत्येक रूप में, प्रत्येक स्थिति में स्त्री असुरक्षा के भय से मुक्त नहीं हो पाती है। उनके उपन्यासों में स्त्रियाँ मानसिक, भावनात्मक, लैंगिक तथा आर्थिक शोषण का शिकार हुई हैं। 'छिन्नमस्ता' की प्रिया अपने ही घर में अपने सगे बड़े भाई द्वारा शोषित होती रही, विवाह के बाद पति नरेंद्र द्वारा उसका मानसिक तथा भावनात्मक शोषण होता रहा। 'पीली आंधी' उपन्यास में भी महिला असुरक्षा की समस्या को दर्शाया गया है। किशन की पत्नी राधा कुएँ से पानी लाने वृद्धा काकीसा के घर जाती है तो उसे सावधान करते हुए काकीसा समझाती हैं कि "किशन की बीणनी यों सई सिंझा गांव में अकेली मत निकला करो। जमाना खराब है। पास के गांव से खबर आई कोई धाड़ौती मंदिर से लौटती हुई बाणिये की लुगाई को उठाकर ले गया।"2 'आओ पेपे घर चलें' उपन्यास में विदेशी पृष्ठभूमि में 'प्रभा' और 'अग्निसंभवा' में आइवी नामक पात्र के माध्यम से उन्होंने स्त्री के आर्थिक शोषण और उसकी सामाजिक स्थिति की ओर संकेत किया है। 'अपने-अपने चेहरे' की रमा मानसिक और भावनात्मक शोषण का शिकार होती है। वह अपने प्रेम संबंधों को लेकर सामाजिक दबाव का सामना करती है और विवाहित मिस्टर गोयनका से प्रेम संबंध के कारण सामाजिक उलाहने सुनती है किंतु संबंध-विच्छेद नहीं कर पाती है और अपराधबोध से ग्रस्त होकर कहती है, "इस घुटन से छुटकारा कैसे मिले ? अपने लड़खड़ाते आत्मविश्वास को कैसे संभालूँ ?"3 संस्कारों की बेड़ियों में जकड़ी हुई स्त्री निर्दोष होते हुए भी अपराधबोध का भार सहते हुए अपने जीवन के प्रत्येक क्षण को नारकीय बना देती है। यह कैसी विडंबना है कि स्त्री का बलात्कार करने वाला पुरुष स्वच्छंद विचरण करता है और स्त्री यौन-शुचिता के मिथक के कारण स्वयं को अपराधी मानने लगती है, समाज भी स्त्री को ही दोषी मानता है।

प्रभा जी ने भारतीय समाज में दहेज समस्या को अत्यंत संवेदनशील ढंग से अपने उपन्यासों में प्रस्तुत किया है। दहेज के कारण ही माता-पिता के लिए पुत्री का जन्म किसी अभिशाप के समान कष्टदायी प्रतीत होने लगता है। दहेज की समस्या न केवल आर्थिक बोझ है बल्कि यह स्त्रियों के लिए मानसिक त्रासदी का कारण भी है। 'छिन्नमस्ता, 'अपने अपने चेहरे', 'पीली आंधी', 'स्त्रीपक्ष' आदि उपन्यासों में दहेज प्रथा की समस्याओं को दर्शाया गया है। सामाजिक प्रतिष्ठा, मान-सम्मान बनाए रखने के लिए, पुत्री के लिए अच्छा घर-वर पाने के लिए दहेज देना अनिवार्य बताया गया है। भारतीय विवाह परंपरा में दहेज के रूप में अनावश्यक आर्थिक बोझ लड़की के पिता को उठाना पड़ता है इसलिए पुत्री का जन्म होते ही पिता के समक्ष दहेज समस्या मुँह बाए खड़ी हो जाती है। ससुराल में पुत्री की खुशी इस बात पर निर्भर करती है कि वह अपने साथ कितना दहेज लेकर आई है। 'छिन्नमस्ता' की कस्तूरी अपनी पुत्रियों के विवाह एवं दहेज के लिए चिंतित दिखाई देती है। प्रिया का कथन इस समस्या को और अधिक स्पष्ट करता है- "मारवाड़ी घर में जिस दिन बेटी जनम लेती है, उसी दिन से माँ अपने खुद के दहेज में मिली हुई बहुमूल्य चीजें, टीशू के थान, सच्चे जरदोज की साड़ियाँ, घाघरे, ओढ़ने, चांदी के बर्तन, गहने सब अलग रखने लगती है।"4

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2 | Issue-12 | December - 2024 | Page 93-96

प्रभा जी ने अपने उपन्यासों में विवाह-जनित समस्याओं की ओर सबका ध्यान आकृष्ट किया है। भारतीय समाज में पुत्री को बोझ तथा पराया धन समझकर शीघ्रातिशीघ्र उसका विवाह करके माता-पिता अपने दायित्व से मुक्त होना चाहते हैं। इसी मानसिकता के चलते वे धन संपत्ति को ही सुख का आधार मानकर अपनी कन्या का विवाह अयोग्य व्यक्ति से करने में भी नहीं झिझकते हैं। 'छिन्नमस्ता' उपन्यास में प्रिया की सुंदर बहन सरला का विवाह एक कुरुप व्यक्ति से होना बताया गया है, प्रिया के बड़े भाई का विवाह भी धन को आधार मानकर एक कमजोर लड़की से कर दिया जाता है। तनावपूर्ण वैवाहिक जीवन से त्रस्त प्रिया तमाम कोशिशों के बावजूद अपने पति नरेंद्र के घर में स्वयं को बेघर महसूस करती हुई कहती है, "ससुराल..... क्या वह कभी मेरा घर हो सका, मेरा अपना घर ? वर्षों से तो लगता है केवल खाली सड़क पर चल रही हूँ। घर नरेंद्र का है, संजू का है, सासू जी का है। एक व्यवस्था जिसमें अपनी पूरी ईमानदारी के बावजूद मैं मिसफिट होकर रह गई।"5 'छिन्नमस्ता' में नीना एक स्वतंत्र विचारों वाली युवती है, वह एक जर्मन युवक से प्रेम-विवाह कर सुखमय जीवन जीती है किंतु उसकी माँ तिलोत्तमा इस संबंध को स्वीकार नहीं करती है। 'अपने अपने चेहरे' उपन्यास में अनमेल विवाह के कारण मिस्टर गोयनका और मिसेस गोयनका का जीवन तनावपूर्ण रहता है। 'पीली आंधी' उपन्यास में पद्मावती अनमेल विवाह के दुष्परिणामत: शीघ्र ही विधवा हो जाती है और निःसंतान होने का दंश भोगती है। सोमा का विवाह नपुंसक गौतम के साथ उसकी इच्छा के विरुद्ध कर दिया जाता है। आगे चलकर सोमा और विवाहित प्रो. सुजीत के मध्य विवाहेत्तर प्रेम संबंध और प्रेम-विवाह का वर्णन मिलता है।

प्रभा खेतान के उपन्यासों में स्त्री के एकाकीपन की समस्या को भी दर्शाया गया है। हजारों वर्षों की पारंपरिक मानसिकता ने स्त्री को मानसिक रूप से कमजोर और संकुचित बना दिया है। 'छिन्नमस्ता' की प्रिया, उसकी सास, कस्तूरी, छोटी मां आदि सभी एकाकीपन का दंश अनुभव करते हैं। प्रिया समाज से विद्रोह करके व्यावसायिक सफलता प्राप्त करती है, अपनी पृथक पहचान बनाती है किंतु धन, प्रतिष्ठा, पहचान होते हुए भी पति नरेन्द्र का उसके साथ न होना उसे हमेशा कचोटता है, वह सफल होकर भी एकाकीपन का अनुभव करती है, "बस अकेलेपन से भय लगता था। क्या होगा बिना पुरूष के इस जीवन का ? छोटी मां, मैं और नीना साथ खाना खाते और मैं सोचती - यदि एक पुरुष भी उपस्थित होता...।"6 'अपने अपने चेहरे' उपन्यास की रमा विवाहित पुरूष से प्रेम करती है परंतु स्वयं आजीवन अविवाहित रहकर एकाकी जीवन व्यतीत करती है, रीतू जब अपने ससुराल, पति व संतान को त्यागकर मायके आती है तब वह स्वयं को नितांत अकेली पाती है। 'पीली' आंधी उपन्यास में पद्मावती वैधव्य की पीड़ा सहती हुई भीतर से स्वयं को एकाकी अनुभव करती है ।

प्रभा खेतान ने स्त्री शिक्षा की समस्या को भी अपने उपन्यासों में प्रमुखता से दर्शाया है। भारतीय समाज में स्त्री शिक्षा वैदिक काल से प्रचलित थी, स्त्री-पुरुष बिना किसी भेदभाव के शिक्षा प्राप्त करते थे। कालांतर में स्त्री-पुरुष में भेदभाव अधिक होने लगे। स्त्री को एक उपभोग्य वस्तु माना जाने लगा तथा उसकी प्रतिभा, बुद्धि, वैचारिकता के दमन हेतु उसे शिक्षा से वंचित रखा जाने लगा। शिक्षा के अभाव में स्त्रियाँ और अधिक दमित व शोषित होती रहीं। पूर्णतः पुरुषवादी सत्ता के अधीन रहकर पराश्रित जीवन जीने को विवश हो गई। शिक्षा के अभाव में स्त्री जाति का

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2 | Issue-12 | December - 2024 | Page 93-96

आत्मविश्वास खोने लगा और वह अपने ही अस्तित्व को भूल बैठी। इस विडंबना के विषय में यशपाल ने लिखा है, कि "आपकी संस्कृति में नारी का गौरव उसके अपने व्यक्तित्व में नहीं है। उसका गौरव किसी की श्रीमती बन जाने में ही है। वह किसी की बेटी, किसी की बहू, किसी की माँ है। वह स्वयं कुछ नहीं है। आपके समाज में नारी को उसके व्यक्तिगत नाम से पुकारना उसका अपमान है। उसे अमुक की श्रीमती, अमुक की मां, अमुक की बहन कहना ही उसका सम्मान है। अर्थात् नारी अपने व्यक्तित्व को प्रकट करे तो वह निर्लज्जता है वह पुरुष की छाया में छिपी रहे तो उसका सम्मान है। कैसी गुलामी सीखा दी है आपने स्त्री को...।"7

प्रभा खेतान के उपन्यास स्त्रियों की अस्मिता, उनके अस्तित्व और उनके अधिकारों पर प्रकाश डालते हैं। उनके उपन्यासों के पात्र न केवल सामाजिक दबावों का सामना करते हैं, बल्कि मनोवैज्ञानिक द्वंद्व और आत्मविश्लेषण के परिणामस्वरूप वे अपने अस्तित्व और आत्मसम्मान की लड़ाई भी लड़ते हैं। प्रभा खेतान का लेखन स्त्री के मानसिक और भावनात्मक संसार की गहरी समझ को दर्शाता है । उनका लेखन हमें स्त्री के संघर्ष और उसके अधिकारों के प्रति जागरूक करता है। "स्त्री होना कोई अपराध नहीं है, पर नारीत्व की आंसू भरी नियति स्वीकारना बहुत बड़ा अपराध है।"8 प्रभा जी की कथानायिकाएँ स्त्री की अश्रुपूर्ण नियति को नकारते हुए अपने संघर्षों के माध्यम से हमें न केवल स्त्री की स्थिति और दिशा को समझने की प्रेरणा देती हैं, बल्कि यह भी सिखाती हैं कि आत्मनिर्भरता, स्वाभिमान और स्वतंत्रता की दिशा में किए गए संघर्ष हमेशा सार्थक होते हैं।

संदर्भ ग्रंथ :-

1. खेतान, प्रभा: अपने अपने चेहरे, नई दिल्ली: किताबघर संस्करण, 1996, पृ. 93

2.खेतान, प्रभा: पीली आंधी, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2001, पृ. 16

3.खेतान, प्रभा अपने अपने चेहरे, नई दिल्ली: किताबघर संस्करण, 1996, पृ. 197

4.खेतान, प्रभा: छिन्नमस्ता, नई दिल्ली राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1997, पृ. 77

5.खेतान, प्रभा: छिन्नमस्ता, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1997, पृ. 161

6.खेतान, प्रभा: छिन्नमस्ता, नई दिल्ली राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1997, पृ.210

7.चतुर्वेदी, जगदीश्वर, सिंह, सुधा (संपा.) स्त्री अस्मिता साहित्य और विचारधारा, कोलकाता आनंद प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2004 पृ. 210

8.खेतान, प्रभा: छिन्नमस्ता, नई दिल्ली राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1997, पृ.177